वैदिक दीपावली लक्ष्मी पूजन पद्धति

लेखक
ज्योतिषाचार्य पं. अयोध्या प्रसाद गौतम

प्रकाशक

ज्योतिष मठ संस्थान

ईएम-129, नेहरू नगर, भोपाल, मो. नं. 9827322068
pt.vinodgoutam@gmail.com, web.www.jyotishmath.com

वैदिक दीपावली लक्ष्मी एवं कलश गणेश पूजन पद्धति

लेखक : ज्योतिषाचार्य पं. श्री अयोध्या प्रसाद गौतम गौतम

© सर्वाधिकार सुरक्षाधीन : ज्योतिष मठ संस्थान, भोपाल

सहयोग : पं. श्री कैलाशचंद्र दुबे, पं. श्री विनोद गौतम

प्रकाशक : ज्योतिष मठ संस्थान, ईएम–129, नेहरू नगर, भोपाल

प्रकाशन वर्ष : 2018 संवत 2075 (दशहरा)

संस्करण : प्रथम

मूल्य : 51 रुपए

आवरण : शनिदेव ग्राफिक्स, भोपाल 9926980190

दो शब्द

दीपावली। कार्तिक मास की अमावस्या को मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचंद्रजी के साथ सीताजी एवं लक्ष्मणजी 14 वर्ष की वनवास अवधि पूरी कर लंकापति रावण का संहार कर अयोध्यापुरी वापस आए थे। उनके स्वागत सम्मान में समस्त अयोध्यावासियों ने खुशी के दीपमालाओं को जलाकर अयोध्या में उत्सव मनाया था। आज ही के दिन भगवान महावीर एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती ने निर्वाण प्राप्त किया था। इसी कार्तिक कृष्ण अमावस्या के दिन द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण ने भी महानिर्वाण प्राप्त किया था। यह अमावस्या का दिन अनेक महत्वपूर्ण स्मृतियों से भरा है। आज के दिन महाँदेवी श्रीलक्ष्मी माताजी का समुद्र मंथन से प्रकटत्व हुआ था। आज ही के दिन व्यापारी, व्यवसायी लक्ष्मीजी की प्रसन्नता का हिसाब-किताब

करते हैं तथा आगामी वर्ष को और अधिक लक्ष्मी की कृपा की प्राप्ति के लिए श्रद्धापूर्वक आरती कर दीपमाला प्रज्जवलित करके उत्सव मनाते हैं। सद्ग्रंथों में अनेक गाथाएं दीपावली लक्ष्मी पूजन पर उल्लेखित हैं। जिसे अनादि काल से अनेक धर्मावलंबी मानते आ रहे हैं। वैदिक लक्ष्मी पूजन पद्धति के द्वारा सभी भक्तजन लक्ष्मी आराधक-साधक लक्ष्मी की प्राप्ति, लक्ष्मी को प्रसन्न करने के साथ उनकी पूजन-अर्चन कर वास्तविक फल की प्राप्ति कराने में सहायक होवे। इसी कामना से विश्वजन कल्याणार्थ यह वैदिक पद्धति लोकहित में समर्पित है। महाँलक्ष्मीजी सदैव आप पर प्रसन्न रहें, इसी कामना के साथ दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं।

– ज्योतिषाचार्य पं. अयोध्या प्रसाद गौतम
संस्थापक ज्योतिष मठ संस्थान, नेहरू नगर, भोपाल

दीपावली श्री गणेश-लक्ष्मीजी पूजन सामग्री

धनिया, गुड़, रोली, इत्र, गंगा जल, सिंदूर, हल्दी पिसी हुई, कलश, चावल, धूप, श्रीफल, नारियल, दीप पंचामृत, दूध, दही, घृत शक्कर, शहद, कलावा, सप्तधान्य, सर्वोषधी, सप्तमृदा, पंचरत्न, पंचपल्लव, सूत्र, यज्ञोपवीत, केले के पत्ते, कपूर, पान, बंदनवार, चौकी, पंच पल्लव वस्त्र आभूषण, पुष्प माला, ऋतु फल, नैवेद्य, श्री लक्षमी जी की प्रतिमा, गुलाल, तुलसी दल, अबीर, पंच मेवा, मिष्ठान, खीर, बतासा, दूर्वा, गौ का गोबर, लाल कपड़े की थैली, लक्ष्मीजी के वस्त्र, आभूषण श्रृंगार, सामान, प्रसाद के लिए मिष्ठान, धोती, उपन्ना,साड़ी, ब्लाउस आदि दान वस्त्र, दक्षिणा।

मार्तण्ड यंत्र		
८	१	६
३	५	७
४	९	२

श्रीलक्ष्मी पूजन की विधि

सर्वप्रथम पूजा घर की पूर्व दिशा या उत्तर दिशा की दीवार पर लाल रंग या रोली से पंच दशीय यंत्र इसे प्रकाश यंत्र भी कहते हैं और यही सूर्य यंत्र भी है। पहले से लिखकर तैयार रखें।

तीन चौकियां रखें पूर्व दिशा की ओर। बीच की चौकी पर

महालक्ष्मीपीठ निर्माण

चौकी-१	चौकी-२	चौकी-३
इस चौकी में कलम, दवात आदि यांत्रिक वस्तुओं के साथ अचल संपत्तियों की रजिस्ट्रियां एवं मंगल कलश की स्थापना करें।	इस पीठ पर महाँलक्ष्मी, गणेशजी की प्रतिमा के साथ लक्ष्मीरूपी स्वर्ण मुद्राएं, नगदी प्रचलित रुपए आदि रखें।	इस चौकी में दसविधि लक्ष्मी एवं अष्टसिद्धियों के साथ कुबेर का आवाहन, पान सुपाड़ी एवं अक्षत रखकर १९ बार करें।

महाँलक्ष्मी गणेश की मूतियां रखें। दक्षिण की ओर वाली चौकी पर अष्ट लक्ष्मी, अष्ट सिद्धि, कुबेर हेतु पान सुपाड़ी अक्षत पुष्प के पुंज में अलग-अलग स्थानों पर रखें।

चौकी क्रमांक 1 - उत्तर की ओर की चौकी पर बहीखाता, कलम, दवात, नवीन, लाल थैली, एक पान पर सुपाड़ी अक्षत पुंज में गज प्रतीक स्थापित करें। आग्नेय कोण में अखंड दीप जला दें। थाल में पूजन की सामग्री, लौटे में जल,

पुष्प, पवित्री एवं कुशा रखें। पूर्वार्ध मुख आराधक उत्तराभि मुख आचार्य बैठे। सर्वप्रथम आराधक एवं सभी पूजन सामग्री को मंत्र से पवित्र करें। यजमान को पैती पहना दें। आचमन, कलावा, तिलक के बाद जजमान को अक्षत पुष्प देकर स्वस्ति वाचन मंगल मंत्र के साथ लक्ष्मी माता की आराधना एवं कुल देवताओं की आराधना करें। गौरी, गणेश का आवाहन कर महालक्ष्मी एवं अष्टसिद्धि का आवाहन करें। गणेश एवं महाँलक्ष्मीजी की वैदिक मंत्रों से षोडशोपचार पूजा करें। दशमहाँलक्ष्मी अष्ट सिद्धियों का पृथक-पृथक आवाहन एवं पंचोपचार पूजन प्रार्थना करें। पान पर तीन जगह अक्षत पुष्प, सुपाड़ी के पुंज चौकी पर रखकर महाँकाली, महाँलक्ष्मी, महाँसरस्वती की पंचोपचार विधि से पूजा करें। प्रार्थना एवं अपनी मनोकामना का निवेदन करें। नवीन लाल रंग की थैली में अक्षत पान सुपाड़ी पुष्प से कुबेर अष्ट लक्ष्मी का आवाहन कर पूजन प्रारंभ करें। बही में पंचदेवों का स्मरण कर गणेश, गौरी, लक्ष्मी, कुलदेव, विष्णु इनका भी पूजन करें। ॐ महाँलक्ष्मी सदा सहाय करें या जो प्रथा हो उसे बही में लिख दें। यह सिन्धूर, घृत से लाल रंग या पीले रंग से होना चाहिए। घर के बाहर दरवाजों में स्वास्तिक, शुभ लाभ आदि लिखकर लक्ष्मीजी को आमंत्रित करें। रंगोली आदि घर के दरवाजे पर

वन्दनवार पूर्व में ही सजाकर रखें। बाद कलम-दवात और मंगलकारी शक्तियों का आवाहन-पूजन करें। बही में इसी प्रकार से नीचे मिति, संवत, माह, पक्ष, तिथिवार भी लिख दें। कहीं-कहीं बही पूजन दिवाली की रात को न होकर अन्य तिथियों में पूजा करने की प्रथा है। जैसी अपनी प्रथा हो उसके आधार पर पूजा करें।

इसके पश्चात तुला (तराजू) बांट, में रक्षाबंधन, स्वास्तिक चिह्न बनाकर अक्षत से पूजा करें। गज, दुकान, तिजौरी, भंडारगृह की पूजा, धान्य पूजा, क्रमशः पंचोपचार से करें। अखंड दीप या प्रथम जलाए गए दीपक को ही अखंड दीप मानकर पूजा करें, तथा अन्य दीपक जलाकर पूजा कर दीपमाला बनाकर महाँलक्ष्मी को अर्पित करें। संकल्प में महाँलक्ष्मी एवं जिन देवताओं का पूजन किया गया है। उन सभी का उच्चारण कर अपनी मनोकामना का निवेदन करते हुए संकल्प करें। आचार्य द्वारा कराए गए पूजन के उपकारार्थ दक्षिणा वस्त्र, दृव्य आदि का संकल्प एवं अन्य ब्राह्णमों को यथाशक्ति दक्षिणा का संकल्प करें। देवताओं से निवेदन परिक्रमा कर देवताओं की आवाहित आरती करें। तथा पंचदेव महाँलक्ष्मी, गौरी, गणेश, अष्ट सिद्धि महाँअष्टलक्ष्मी के नाम से अग्नि प्रज्जवलित कर अग्नि पूजन करें। आवाहित 25 देवताओं के स्वाहा नाम उच्चारण के साथ

लगावे। पुनः वृहद प्रसाद आरती का क्रम पूरा कर पुष्पांजलि अर्पित करें। आचार्य यजमान को तिलक एवं आशीर्वाद मंत्र बोलते हुए प्रसाद देवें, यजमान उपस्थित ब्राह्मणों को यथाशक्ति दक्षिणा देकर विदा करें। अपने पूज्यों-बड़ों से आशीर्वाद प्राप्त करे। अपने कुल देवताओं का स्मरण करते हुए अक्षत-पुष्प तीनों पीठों पर छोड़ कर प्रणाम करें। एवं दीपमालाओं के दीपों को घर पर दरवाजों के दोनों तरफ रखें। प्रत्येक कमरों में आंगन आदि पवित्र लक्ष्मी दीप सभी स्थानों में रखें। इसके बाद परिवार के साथ प्रसन्नतापूर्वक भजन-कीर्तन, पटाखें आदि फोड़कर उत्सव मनाएं।

इति लक्ष्मी पूजा विधि समाप्तम्।

वैदिक दीपावली लक्ष्मी-गणेश पूजन पद्धति

यजमान पूर्वमुख शुद्ध आसन पर बैठ जाएं। कुशा या आम्रपल्लव से अपने ऊपर तथा पूजन सामग्री पर जल छिड़के।

मंत्र – **ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।**
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

तीन बार आचमन करें आचार्य तिलक, कलावा, पवित्री आदि षटकर्म करावे–

ॐ केशवाय नमः, ॐ माधवाय नमः ॐ नारायणाय नमः।।

हाथ धो लें–मंत्र – **ॐ हृषीकेशाय नमः। पुण्डरीकाक्षः पुनातु।।**

दाहिने हाथ में अक्षत–पुष्प लेकर स्वस्तिवाचन करें–

मंत्र–**ॐ स्वस्तिन न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः।**
स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टने मिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंया वानो विदथेषु जग्मयः।
अग्निर्जिह्वा मनवः सूर्यचक्षसो विश्वेनो देवा अवसा गमन्निह।।
भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः स्थिरै रंगे।।

तुष्टवा ँ सस्तनू भिर् व्यशे महि देवहितं यदायुः।।
शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा शन्तनुनाम्।।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारी रिक्ता युर्गन्तोः।।
अदितिर् द्यौ रदितिरन्तरिक्षमदितिर् माता स पिता स पुत्रः।
विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिर्जात मदितिर्जनित्वम्।।
द्यौः शांतिरन्तरिक्ष ँ शांतिः पृथिवी शांतिरापः
शांतिरोषधयः शांतिः वनस्पतयः शार्ंतिर्विश्वेदेवाः।
शांतिर्ब्रह्मशांतिः सर्वे ँ शांतिः
शांतिरेव शांतिः सामा शांतिरेधि।।
यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु शन्न।
कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः।।
विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुभ। यद् भद्रं तन्न आसुव।
ॐ शांतिः। शांतिः। शांतिः। सुशांतिर्भवतु। सर्वारिष्ट शांतिर्भवतु।।

हाथ का अक्षत-फूल अपने आगे पृथिवी पर रख दें। फिर दूसरा अक्षत-फूल लेकर मंगल पाठ करें -

मंत्र–**ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।**
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।
विद्यारमभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णम् चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोप शान्तये।।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषा मिन्दी वरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।
वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरुमे देव सर्वकार्येषु सर्वदाः।।
सर्वमंगल मागल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।
अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थम् पूजितो यः सुरासुरैः।

सर्वविघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।

ॐ श्रीमन् महागणाधिपतये नमः।

लक्ष्मीनारायणाभ्यं नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः।

वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शची पुरन्दराभ्यां नमः।

मातृपितृ चरण कमलेभ्यो नमः।

इष्ट देवताभ्यो नमः। कुल देवताभ्यो नमः।

ग्राम देवताभ्यो नमः। वास्तु देवताभ्यो नमः।

स्थान देवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।

सिद्धि बुद्धि सहिताय ॐ श्रीमन् महाँगणाधिपतये नमः।

यजमान हाथ का अक्षत-फूल पृथ्वी पर रख दें। पुनः कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर संकल्प करे।

आचार्य संकल्प पढ़े- **हरिः ॐ तत्सत् विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य ॐ नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य श्री ब्रह्मणोऽन्हि द्वितीय परार्द्धे-श्री श्वेतवाराहकल्पे-वैवस्वत मन्वन्तरे-अष्टाविंशति तमे युगे-कलियुगे-कलिप्रथम चरणे जम्बूदीपे भारतवर्षे, भरतखंडे-आर्यावर्तान्तर्गत**

ब्रह्मावर्तैकदेशे-पुण्यक्षेत्र विक्रमशाके बौद्धावतारे-यथानाम संवत्सरे यथायने सूर्ये-यथाऋतौ महामांगल्यप्रदेमासे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे-यथानक्षत्रे-यथाराशिस्थिते सूर्ये-यथा-यथा राशि स्थितेषु शेषेशु ग्रहेषु-सत्सु यथालग्नमुहूर्त योग करणान्वितायाम्-एवं ग्रहगुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यपर्वणि श्रुतिस्मृति-पुराणोक्त फल-प्राप्तिकामः अमुक गोत्रः नामाऽहम् मम सकुटुम्बस्य सर्वापच्छान्तिपूर्वक-अनवच्छिन्नसन्ततिबृद्धि क्षेम-स्थैर्य-विजय कीर्तिलाभ-शत्रुपराजय-आयुः- आरोग्य-ऐश्वर्य आदि अभिवृद्धि-द्वारा-सदभीष्टसिध्यर्थम्-वर्तमाने-अस्मिन् - व्यापारे - शुभपूर्वक-चतुर्विध-लक्ष्मीवृध्यर्थम्ः आगतानां संरक्षणार्थम्-च गौरी-गणपति-पूजन पूर्वकं श्रीमहाँकाली महाँलक्ष्मी-महाँसरस्वती आदि देवी-आवाहित देवतानां च पूजनं करिष्ये।।

हाथ का कुश-अक्षत-जल सामने भूमिपर छोड़ दें। भूमि पूजन करें फिर गौरी-गणेश-कलश-नवग्रह-पोडशमातृका का पूजन कर दें। इसके बाद फूल लेकर मिट्टी या धातु रजत या स्वर्ण निर्मित लक्ष्मी-गणेश का ध्यान करें।

यह विधान ऐच्छिक है विशेष महाँलक्ष्मीपूजन में प्रयोग करें

मंत्र–**ॐ गणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनां ꣳ त्वा निधिपति ꣳ हवामहे वसो मम। आहम जानि गर्भ धाम त्वम जासि गर्भधम्।**

ॐ भूर्भुव स्वः सिद्धि–बुद्धि सहिताय गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि।

ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्च्चन।
ससस्त्यश्श्वकः सुभद्द्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।

ॐ भूर्भुव स्वः गौर्ये नमः, गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठापन

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका का कर्ता से प्रतिष्ठापन करावे–

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्ट्टं य्यज्ञठ0
समिमं दधातु। व्विश्श्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो ॐ प्रतिष्ठ्ठ।।
गणेशाऽम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।

आसन समर्पण

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका को कर्ता आसन प्रदान करे–

ॐ पुरुष ऽएवेदर्ठ0 सर्व्वं यद्भूतं यच्च भाव्व्यम्। उतामृतत्त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आसनं समर्पयामि।

पाद्य

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका को कर्ता से पाद्य अर्पित करावे–

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्ज्यायाँश्च्च पूरुषः। पादोऽस्य व्विश्श्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्य

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका को कर्ता से अर्घ्य चढ़वावे–

ॐ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः। ततो व्विष्व्वङ् व्यक्क्रामत्साशनानशने ऽअभि।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीय

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका को कर्ता से आचमनीय जल प्रदान करावे–

ॐ ततो व्विराडजायत व्विराजो ऽअधि पूरुषः। स जातो ऽअत्यरिच्चयत पश्चाभ्दूमिमथो पुरः।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

स्नान

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका को कर्ता से स्नान करावे–

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्च्चक्क्रेव्वायव्वानारण्ण्या ग्राम्याश्च्च ये।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नान

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका को कर्ता से पञ्चामृत से स्नान करवाये–

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंञ्चामृत स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नान

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका को कर्ता शुद्ध जल से स्नान करवावे–

ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिमालस्त ऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा ऽअवलिप्ता रौद्रा नभो रूपाः पार्ज्जन्याः।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्र

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका को कर्ता से वस्त्र प्रदान करवावे–

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्सऽउश्रेयान्भवति जायमानः। तन्धीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाद्ध्यो मनसा देवयन्तः।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्र

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका को कर्ता से उपवस्त्र प्रदान करावे–

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्स्वः। व्वासो ऽअग्ने व्विश्वरूपर्ठ0 संव्ययस्व व्विभावसो।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवती

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए कलश, गणेश को कर्ता से यज्ञोपवीत चढ़वा दे-

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

गन्ध

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका को कर्ता से गन्ध प्रदान करावे-

ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा व्विद्द्वान्यक्ष्मादमुच्यत।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

रक्तचन्दन

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश, अंबिका को कर्ता से रक्तचन्दन लगवा देवे-

ॐ अर्ठ0 शुनाते अर्ठ0 शुः पृच्यतां परुषापरुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, रक्तचंदनं समर्पयामि।

अक्षत

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका को कर्ता से अक्षत प्रदान करावे–

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया ऽअधूषत। अस्तोषत स्वभानवो व्विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतं समर्पयामि।

पुष्प

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका को कर्ता से पुष्पमाला प्रदान करावे–

ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वा ऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।

दूर्वा

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका को कर्ता से दूर्वा चढ़वा दें–

ॐ काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ति परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दूर्वां समर्पयामि।

पुष्पमाला

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका को कर्ता से पुष्पमाला पहनवावे–

ॐ माल्यादीनि सुगन्धीनी माल्यइत्यादीनी व्यप्रभु मया निवेदतम भक्तया ग्रहण परमेश्वराः।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पमाल्यां समर्पयामि।

सिन्दूर

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका को कर्ता से सिन्दूर चढ़वावे–

ॐ सिन्धोरिव प्राद्धवने शूघनासो व्वात प्रमियः पतयन्ति यह्वा। घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्टा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सिन्दूरं समर्पयामि।

अबीर-गुलाल

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका को कर्ता से अबीर–गुलाल चढ़वावे–

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुं ज्यायां हेति प्परि बाधमानः। हस्तग्घ्नोव्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्द्वान्पुमान्पुमार्ठ0 सं. प्परिपातु व्विश्वतः।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अबीरं गुलालं च समर्पयामि।

धूप

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका को कर्ता से धूप दर्शवा दे–

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्म्मान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः। देवनानामसि व्वह्निनतमर्ठ0 सस्निनतमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं समर्पयामि।

दीप

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका को कर्ता से दीप दिखावे–

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा। अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्य्योव्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। (दोनों हाथों को धोवे)

नैवेद्य

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका को कर्ता नैवेद्य प्रदान करावे-

ॐ नाब्भ्या ऽआसीदन्तरिक्षर्ठ० शीष्ण्णों द्यौः समवर्त्तत। पद्भयां भूमिर्दिशः श्रोत्त्रात्तथालोकाँ२ ऽअकल्प्पयन्।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं समर्पयामि।

आचमनीयजल

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका को कर्ता से आचमनीय जल प्रदान करावे-

ॐ गणाधिप! नमस्तुभ्यं गौरीसुत गजानन!। गृहाण आचमनीयं त्वं सर्वसिद्धि प्रदायकम्। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आचमनीयजलं समर्पयामि।

ऋतुफल

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका को कर्ता से ऋतुफल प्रदान करा दें-

ॐ याः फलिनीर्या ऽअफला ऽअफला ऽअपुष्पा याश्श्च पुष्पिणीः।
बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वर्ठ० हसः।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः,ऋतुफलं समर्पयामि।

ताम्बूल

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका को कर्ता से ताम्बूल प्रदान करावे–

ॐ पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलादिचूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः,ताम्बूल समर्पयामि।

दक्षिणा

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका को कर्ता से दक्षिणा प्रदान करावे–

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः,दक्षिणा समर्पयामि।

आरती

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका को कर्ता से आरती करावे–

ॐ इदर्ठ0 हविः प्रजननं मे ऽअस्तु दशवीरर्ठ0 सर्व्वगणर्ठ0 स्वस्तये।

आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्नयभयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्त्वन्नं पयो रेतो ऽअस्म्मासु धत्त।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आर्तिक्यं समर्पयामि।

पुष्पांजलि

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका को कर्ता से पुष्पांजलि अर्पित करावे–

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्प्रथमान्न्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं श्रैवणाय कुर्महे।
स मे कामान् कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरोवै श्रवणोद्दातु।
कुबेरायवै श्रवणाय महाराजाय नमः।।
ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठयं राज्यं
महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात,
सार्वभौमः सार्वायुषान्तादापरार्धात्, पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिती।।
तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मस्तः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे।
आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।।

ॐ व्विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत व्विश्वतस्पात्।
सं बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः।।
नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथा कालोभ्दवानि च।
पुष्पञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मंत्र पुष्पांजलि समर्पयामि।

प्रदक्षिणा

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका की प्रदक्षिणा यजमान से करवा देवे-

ॐ ये तीर्त्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गि णाः।
तेषाठ० सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

विशेषार्घ्य

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका को विशेष अर्घ्य यजमान से प्रदान करा देवे-

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष! रक्ष त्रैलोक्य रक्षक!।
भक्तानां भयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।
द्वैमातुर कृपासिन्धो! षाण्मातुराग्रज प्रभो!।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद!।।
अनेन सफलार्गेण फलदोऽअस्तु सदा मम।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गणेश एवं अम्बिका की प्रार्थना पुष्पाक्षत से यजमान द्वारा करावे–

ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय। लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञ विभूषिताय। गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय। सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय। भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते।।
नमस्ते ब्रह्मरुपाय विष्णुरूपाय ते नमः।

नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।।
विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।
भक्ताप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक।।
लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रियं।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति तेभ्यो गणेश! वरदो भव नित्यमेव।।

आचार्य यजमान के हाथ में जल देकर इस मंत्र से गणेशजी के ऊपर जल छुड़वा दे-

अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेतां न मम।।

अथ कलश पूजन

ॐ मही द्यौः पृथिवी च न ऽइमं य्यज्ञं मिमिक्षताम्। पितृतान्नो भरीमभिः।।

आचार्य उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करते हुए कर्ता को जिस स्थान पर कलश स्थापित करना हो, वहां की भूमि का स्पर्श करके वहां कुंकुमादि से पवित्र भूमि पर अष्टदल का निर्माण करावे। जहां उसने भूमि स्पर्श किया हो वहां सप्तधान्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए यजमान से छुड़वाये-

ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा।

यस्म्मै कृणोति ब्ब्राह्मणस्तर्ठ राजन्पारयामसि।।

आचार्य धान्य पुंज पर निम्न मंत्र द्वारा कर्ता से कलश स्थापन करवाये-

ॐ आजिग्घ्र कलशं मह्या त्वा व्विशन्त्विन्दवः।

पुनरूर्ज्जा निवर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्मांविशताद्द्रयिः।।

कलश में शुद्ध जल को कर्ता से आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए भरवाये-

ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कन्भसर्ज्जनी स्थो व्वरुणस्य ऽऋतसदन्नयसि व्वरुणास्य ऽऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऽऋतसदनमासीद।।

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए कर्ता से कलश में गन्ध छुड़वाये-

ॐ त्वां गन्धर्व्वाऽअखनँस्त्वामिन्नद्रस्त्वां बृहस्पतिः।

स्वामोषधे सोमो राजा व्विद्वान्नयक्ष्मादमुच्यत।।

आचार्य कलश में सर्वौषधि निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए कर्ता से छुड़वाये-

ॐ या ऽओषधीः पूर्व्वा जाता देवेब्भ्यस्त्रियुगं पुरा।

मनै नु बब्भ्रूणामहर्ठ- शतं धामानि सप्त च।।

आचार्य कलश में दूर्वा निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए कर्ता से छुड़वाये-

ॐ काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्प्परि।
एवा नो दूर्वे प्प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।

आचार्य कलश में पञ्च पल्लव निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए कर्ता से छुड़वाये–

ॐ अश्श्वत्त्थे वो निषदनं पर्ण्णे वो व्वसतिष्कृता।
गोभाज ऽइत्किलासथयत्त्सनबथ पूरषम्।।

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए कर्ता से कलश में पूगीफल छुड़वाये–

ॐ याः फलिनीर्या ऽअफला ऽअपुष्पा याश्श्च पुष्प्पिणीः
बृहस्प्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वर्ठ0 हसः।।

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए कर्ता से कलश में पंचरत्न छुड़वाये–

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्व्यान्न्यक्क्रमीत्। दधद्द्रत्नानि दाशुषे।।

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए कर्ता से कलश में हिरण्य छुड़वाये–

ॐ हिरण्ण्यगर्भ्भः समवर्त्त ताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्म्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए कर्ता से सूत कलावा के द्वारा कलश को चारों ओर से वेष्टित करावे–

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्स्वः।

व्वासो ऽअग्ने व्विश्श्वरूपर्ठ0 संव्व्ययस्व व्विभावसो।।

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए कर्ता से ताम्र के पात्र में अक्षत भरवाकर कलश के ऊपर स्थापित करवाये–

ॐ पूर्ण्णा दर्व्वि परापत सुपूर्ण्णा पुनरापत।

व्वस्नेव व्विक्रीणावहा ऽइषमूर्ज्जर्ठ0 शतक्रतो।।

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए कलश के ऊपर अपने अभिमुख लालवस्त्र आदि से वेष्टित नारिकेत फल का स्थापन कर्ता से करावे–

ॐ याः फलिनीर्या ऽअफला ऽअफला ऽअपुष्प्या याश्श्च पुष्प्पिणीः।

बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वर्ठ- हसः।।

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए स्थापित कलश में अंग के सहित सपरिवार सायुध-सशक्तिक वरुण का आवाहन व स्थापन कर्ता से करावे–

ॐ तत्त्वा यामि ब्ब्रह्मणा व्वन्न्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्ब्भिः।

अहेडमानो व्वरुणे ह बोधयुरुशर्ठ0स मा न ऽआयुः प्रमोषीः।।

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि

स्थापयामि भो वरुण! इहागच्छ इह तिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव।

'ॐ वरुणाय नमः' इस नाम मंत्र से आवाहन कर उस कलश पर ही देवताओं का निम्न मंत्रों से आवाहन करें।

कलशस्य मुखे विष्णुः, कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा, मध्य मातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सप्त, सप्तद्वीपा च मेदिनी।
अर्जुनी गोमती चैव, चन्द्रभागा सरस्वती।।
कावेरी कृष्णवेगा च, गंङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव, माहेन्द्री नर्मदा तथा।।
नदाश्च विविधा जाता, नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि, कलशस्थानि तानि वै।।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि, जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं, दुरितक्षयकारकाः।।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः, सामवेदो अथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः, सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।।

अत्र गायत्री सावित्री, शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं, दुरितक्षयकारकाः।।
कलशाधिष्ठात्र्यो विष्णवादिदेवताः सुप्रतिष्ठिताः भवन्तु।

निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए प्राण प्रतिष्ठा करें-

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्ट्टं य्यज्ञ्ठ0
समिमं द धातु। व्विश्श्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो ॐ प्रतिष्ठ्ठा।।
कलशे वरुणाद्यावाहिताः देवताः सुप्रतिष्ठाः वरदाः भवन्तु।

प्रतिष्ठा करने के उपरान्त वरुण देवता की षोडशोपचार से पूजा करें, उसके पश्चात निम्न प्रार्थना करें।

देवदानवसंवादे मध्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नौऽसि तदा कुम्भ! विधृतो विष्णुना स्वयम्।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।
शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्राविश्वेदेवाः सपैतृकाः।।

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत् प्रसादादिमं पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव!।
सान्निध्यं कुरु देवेश! प्रसन्नो भव सर्वदा।।

निम्न वाक्य का उच्चारण कर अक्षत छोड़ें-**अनया पूजया वरुणाद्या वाहिताः देवताः प्रीयन्ताम न मम।**

श्री लक्ष्मीजी का ध्यान मंत्र-

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूप मश्विनौ व्यात्तम्।
इष्णान्निषाणा मुम्मइषाण सर्वलोकम्मइषाण।

बाएं हाथ में चावल लेकर दाहिने हाथ से 2-2 दाना अक्षत दसनामी लक्ष्मीजी पर छिड़कें- **1. ॐ चपलायै नमः।** **2. ॐ चंचलायै नमः।**
3. ॐ कमलायै ममः। **4. ॐ कात्यायिन्यै नमः।**
5. ॐ जगन्मात्रे नमः। **6. ॐ विश्व वल्लभायै नमः।**
7. ॐ कमल वासिन्यै नमः। **8. ॐ पद्म कमलायै नमः।**
9. ॐ कमलपत्राक्ष्यै नमः। **10 ॐ श्रियै नमः।**

यजमान अक्षत छिड़क कर इसी स्थान के बगल में अष्टसिद्धि का आवाहन करें-

1. ॐ अणिम्ने नमः। **2. ॐ महिम्ने नमः।**

3. ॐ गरिम्ने नमः। **4. ॐ लघिम्ने नमः।**

5. ॐ प्राप्त्यै नमः। **6. ॐ प्राकाम्यै नमः।**

7. ॐ ईशितायै नमः। **8. ॐ वाशितायै नमः।**

ॐ मनोजूतिर्जुषा माज्यस्य बृस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमन्दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्ता मोम् प्रतिष्ठ।।-श्री लक्ष्मी-गमेशाभ्यां नमः।

यजमान एक पान पर सुवर्ण (सोना) या रजत (चांदी) रखकर महाँलक्ष्मी का आवाहन हेतु फूल लेकर ध्यान करें -

ॐ या सा पद्मासनस्था विपुल कटितटी पद्मपत्रायताक्षी।
गम्भीरावर्त नाभि स्तनभरनमिता शुभ्र स्त्रोत्तरीया।।
या लक्ष्मी दिव्यरूपैर्मणिगण खचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः।।
सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमांगल्य युक्ता।।
श्री महालक्ष्म्यै नमः। श्रीमहालक्ष्मी मावाहयामि।।

श्रीलक्ष्मी-गणेश महालक्ष्मी पूजन

यजमान फूल लेकर लक्षअमीजी का आवाहन करें-

ॐ सर्वलोकस्य जननीं सर्व सौख्यप्रदायिनीम्।
सर्वदेवमयी मीशां लक्षअमी मावाहयाम्यहम्।।

श्री गणेशजी का आवाहन करें-

ॐ आगच्छ भगवन्देव ! स्थाने चात्र स्थिरौ भव।
अनाथानाथ सर्वज्ञ विघ्नराज कृपां कुरु।।
ॐ गणानान्तवः इत्यादिना.....।

अक्षत छोड़कर आसन देवे-

ॐ तप्त कांचन वर्णाभं मुक्तामणि विराजितम्।
अमलं कमलं दिव्य मासनं प्रतिगृह्यताम्।।

तीन बार जल छोड़ें-

ॐ पादयोः पाद्यं, हस्तयोः अर्घ्यम्, मुखे आचमनीयं, स्थानीयं जलं समर्पयामि।।

पाद्य-**ॐ गंगादि तीर्थ सभ्भूतं गन्ध पुष्पादिभिर्युतम्।**

पाद्यं ददाम्यहं लक्ष्मि गृहाणाशु नमोऽस्तुते।।

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।

पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।

अर्घ्य देने का मंत्र–**ॐ गौरी सुत नमस्तेऽस्तु सर्वसिद्धि प्रदायक।**

क्षिप्रं प्रसीद देवेश गृहाणार्घ्यम् नमोऽस्तुते।।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरूषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः।

ततो विष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशने अभि।।

आचमन कराने का मंत्र–**ॐ उमासुत नमस्तेऽस्तु गीर्वाण परिपूजित।**

उगृहाणाचमनीयं त्वं सर्वसिद्धि प्रदायकम्।।

ॐ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।

स जातो अत्यरिच्यत पश्चातभ्दूमिमथो पुरः।।

दूब से छिड़ककर पंचामृत स्नान कराने का मंत्र–

ॐ पयोदधि घृतं चैव शर्करा मधु संयुतम्।

स्नानं पंचामृतं देव गृहाण गणनायक।।

कुशा से जल छिड़क कर–शुद्ध स्नान कराने का मंत्र–

ॐ गंगाजल समानीतं हेमाम्भोरुहवासितम्।
स्नानं स्वीकुरु देवेश कपर्दी गणायक।।

अक्षत पुष्प लेकर प्रार्थना करें, आचार्य श्रीसूक्त का पाठ करें –

श्री सूक्तम् महाभिषेकम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।1।।
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।2।।
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।।3।।
कां सोस्मितां हिरण्यप्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तांतर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्।।4।।
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।

तां पद्मनीमीं शरणम् प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।।5।।
आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायांतरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ।।6।।
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोसु राष्ट्रेस्मिन्कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।7।।
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे ग्रहात्।।8।।
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।9।।
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।10।।
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।11।।
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे ग्रहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।12।।

आर्द्रां पुष्कारिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्मालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।13।।
अर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।14।।
ताम आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो विन्देयं पुरुषानहम्।।15।।
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशचं च श्रीकामः सततं जपेत्।।16।।

रेशमी (लाल) वस्त्र पहना दें-

ॐ रक्तवस्त्रं सुयुग्मं च देवानामपि दुर्लभम्।
गृहाण मंगलं देव लमबोदर हरात्मज।।
ॐ युवा सुवासा..... इत्यादिना।

दो बार जल छोड़ें - **वस्त्रान्ते द्विराचमनीयं जलं समर्पयामि।।**

मधुपर्क

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए लक्ष्मीजी को मधुपर्क प्रदान करे–

ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमठ0 रूपमन्नाद्यम। तेनाऽहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्यो ऽन्नादोऽसानी।

ॐ लक्ष्मीदैव्यै नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

सौभाग्यसूत्र

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए लक्ष्मीजी को सौभाग्यसूत्र प्रदान करे–

ॐ सौभाग्यसूत्रं वरदे! सुवर्णमणिसंयुतम्।
कंठे बध्नामि देवेशि! सौभाग्यं देहि मे सदा।।

ॐ लक्ष्मीदैव्यै नमः, सौभाग्यसूत्रं समर्पयामि।

आभूषण

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए लक्ष्मीजी को विविध आभूषण प्रदान करे–

ॐ युवं तमिन्द्रापर्व्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादप तन्तमिद्धतं व्वज्रेण तन्तमिद्धतम्। दूरे चत्ताय छन्त्सद् गहनं यदिनक्षत्।।

ॐ लक्ष्मीदैव्यै नमः, आभूषणं समर्पयामि।

हरिद्राचूर्ण

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए लक्ष्मीजी को हरिद्राचूर्ण आभूषण प्रदान करे–

ॐ हरिद्रारञ्जिते देवि सुखसौभाग्यदायिनी।
तस्मात्त्वां पूजयाभ्यत्र दुःखशान्ति प्रयच्छ मे।।

ॐ लक्ष्मीदैव्यै नमः, हरिद्राचूर्णं समर्पयामि।

गणेशजी को जनेऊ चढ़ाने का मंत्र–

ॐ नवभिस् तन्तुर्भियुक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।
ॐ यज्ञोपवीतं ..... इत्यादिना।

दो बार जल छोड़ें – **ॐ आचमनीयं जलं समर्पयामि।।**

गन्ध (चन्दन) चढ़ाने का मंत्र–

ॐ केशरागरुकर्पूर चन्दादि समन्वितम्।
विलेपनं महालक्ष्मि तुभ्यं दास्यामि भक्तितः।।
ॐ त्वांगगंर्धवा .....इत्यादिना।

अक्षत चढ़ाने का मंत्र–

ॐ अक्षातान् धवलान् देव सिद्धगन्धर्वपूजित।
भक्तय दत्तान् गृहाणेमान् सर्वसिद्धि प्रदायक।।
ॐ अक्षन्नमी मदन्त..... इत्यादिना।

फूल माला चढ़ाने का मंत्र–

ॐ मन्दार पारिजाताद्याः पाटली केतकीं तथा।
मरुवा मोगरं चैव गृहाणाशु नमो नमः।।
ॐ औषधी प्रतिमो..... इत्यादिना।

दूर्वा– **ॐ हरिताः श्वेतवर्णा वा पंच विपत्र संयुता।**
दूर्वाङ्कुरा मया दत्ता गृहाण गणनायक।।
ॐ कांडात कांडात परोहंति..... इत्यादिना।

धूप – **ॐ गन्ध संभार सन्नद्ध कस्तूरो मोद सम्भवम्।**
सुरासर नरानंदं धूपं देवि गृहाण मे।।

दीप – **ॐ कार्पाश वर्त्ति संयुक्तं घृतयुक्तं मनोहरम्।**
तमोनाशकरं दीपं गृहाण परमेश्वरि।
ॐ चन्द्रमा मनलो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

हाथ धो लें–जल छोड़ दें (चुपचाप)।

नैवेद्य – **ॐ शर्कराघृत संयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमम्।**
उपहार समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्।।

फल – **ॐ फलेन फलितं सर्वम् त्रैलोक्यं सचराचरम्।**
तस्मात् फलप्रदानेन पूर्णा सन्तु मनोरथाः।।

आचमन जल छोड़ें –
ॐ शीतलं निर्मलं तोयं कर्पूरेण सुवासितम्।

एतदाचमनीयं च महालक्ष्मि विधीयताम।।

करोदवर्तन–दोनों हाथ की अनामिका (तीसरी) अंगुली में चंदन–रोली लगाकर लक्ष्मी–गणेश पर छिड़क दें –

ॐ नाना सुगन्धि द्रव्यं च चन्दनं कुंकुमान्वितम्।
करोद्वर्तनं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि।।
ॐ ँ सुनाते.......................... इत्यादिना।।

पान सुपारी– **ॐ एलालवंग कर्पूर नागपत्रादिभिर्युतम्।**
पूगीफलेन संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

दक्षिणा – **ॐ हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।**
अनन्तपुण्यफलद मतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।
ॐ हिरण्यगर्भः समावर्तःताग्रे....... इत्यादिना।

फूल लेकर गणेशजी की प्रार्थना करें–

ॐ गेश्वराय देवाय उमापुत्राय वेधसे।
पूजामद्य प्रयच्छामि गृहाण भगवन् मम।।

प्रार्थना श्री लक्ष्मीजी–

ॐ भव नित्यं महालक्ष्मि! सर्वकाम प्रदायिनी।
सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महालक्ष्म्यै नमोऽस्तुते।।

फूल लक्ष्मी–गणेशजी पर चढ़ा दें

एक पान पर तीन जगह रखें अक्षतपुंज पर श्री महाँकाली–महाँलक्ष्मी–महाँसरस्वती की पूजा करें। फूल लेकर प्रार्थना करें–

श्री महाँकाली की प्रार्थना का मंत्र–

ॐ खड्गं चक्र गदेषु चाप परिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः।
शंखं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग भूषावृत्ताम्।।
नीलाश्मद्युतिमास्य पाद दशकां सेवे महाकालिकाम्।
याम स्तौत स्वपितौ हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।।

श्री महाँलक्ष्मीजी की प्रार्थना का मंत्र–

ॐ अक्षसत्रक् परशुं गदेषु कुलिशं पद्यं धनुष्कुण्डिकाम्।
दण्डं शक्तिमसिं च जर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।।
शूलं पाश सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्।
सेवे सैरिभ मर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।

श्री महाँसरस्वतीजी की प्रार्थना का मंत्र–

ॐ घण्टां शूलहलानि शंखमुसले चक्रं धनु सायकम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त विलसच्छीतांशु तुल्यप्रभाम्।।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतां माधारभूतां महा।
पूर्वामत्र सरस्वती मनुभजे शुम्भादि दैत्यार्दिनीम्।।
ॐ श्रीमहाँकाल्यैनमः। ॐ श्रीमहाँलक्ष्म्यैनमः।
ॐ श्रीमहाँसरस्वत्यैनमः।

हाथ का अक्षत–पुष्प पुंज पर छोड़ दें। इनकी पंचोपचार पूजा कर दें। 3 बार ज–चंदन–रौली–अक्षत–फूल–धूप–दीप–नैवेद्य–आचमन–पान–सुपारी दक्षिणा चढ़ा दें।

ॐ नमस्तेऽस्तु महालक्ष्मि! महासौख्य प्रदायिनि।
सर्वम् देहि मे द्रव्यं दीनानां भुक्ति हेतवे।।
धनं धान्यं धरां धर्म कीर्ति मायुर्यशः श्रियम्।
यन्मया वाञ्छितं देवि! तत्सर्वम् सफलं कुरु।।

ॐ श्रीमहाँलक्ष्म्यै नमः। ॐ श्रीमहाँलक्ष्म्यै नमः। ॐ श्रीमहाँलक्ष्म्यै नमः।

फूल अक्षत पुंज पर चढ़ा दें।

।। थैली में कुबेर पूजन-अष्ट लक्ष्मी पूजन।।

बाएं हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से कपड़े की थैली में 2-2 दाना अक्षत छिड़क कर अष्ट लक्ष्मी तथा कुबेर की पूजा करें।

अष्ट लक्ष्मी आवाहन मन्त्र -

1. ॐ आद्यलक्ष्म्यै नमः। **2. ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः।**
3. ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः। **4. ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः।**
5. ॐ कामलक्ष्म्यै नमः। **6. ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः।**
7. ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः। **8. ॐ योगलक्ष्म्यै नमः।**

ॐ श्री अष्ट लक्ष्म्यै नमः। अष्ट लक्ष्मीम् आवाहयामि।

कुबेर आवाहन मन्त्र -

ॐ आवाहयामि देवत्व मिहा याहि कृपां कुरु।
कोशं वर्धय नित्यं त्वं भो कुबेर सुरेश्वर।
श्री कुबेराय नमः-कुबेरम्-आवाहयामि-स्थापयामि-पूजयामि।

ॐ मनोजूति र्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमन्दधातु।

विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ।।

पंचोपचार पूजन करें–गन्ध–अक्षत–फूल आदि चढ़ाकर पूजा कर दें। मंत्र पढ़ते रहें –

ॐ श्री अष्टलक्ष्म्यै नमः। ॐ श्री कुबेराय नमः।

हाथ में जल लेकर छोड़ दें पढ़ें–

ॐ एतेन गन्धाक्षत–पुष्प–धूप–दीप नैवेद्य–ताम्बूल–पूगीफल–दक्षिणा सहितेन अनेन पूजनेन श्री अष्टलक्ष्मी–कुबेरदेवताः प्रीयन्ताम् न मम।

फूल लेकर अष्टलक्ष्मी की प्रार्थना करें –

ॐ धनं धान्यं धरां धर्मम् कीर्तिं मायु र्यशः श्रियम्।
पुत्रान् सर्वकामांश्च अष्टलक्ष्मि! प्रयच्छ मे।।

कुबेर प्रार्थना – **ॐ धनाध्यक्ष देवाय नर यानोप वेशिने।**
नम्ते राज राजाय कुबेराय महात्मने।।
कुबेराय नमस्तुभ्यं नाना भण्डार संस्थिता।
यत्र लक्ष्मीर्भवेद् देव धनं चिनु नमोऽस्तुते।।

इसके पश्चात गणेश, गौरी, महाँलक्ष्मी 10 अष्टसिद्धि, कुबेर, कुलदेव, इष्टदेव आदि के यथाशक्ति हवन सामग्री से स्वाहा आचार्य करा देवें।

।। बही पूजन।।

बही पर स्वास्तिक बनाकर एक पान में हल्दी लगाकर बही में चिपका दें। सरस्वती की पूजा करें। आवाहन–अक्षत–फूल लेकर प्रार्थना करें –

ॐ देवीस्तिस्त्रस्तिस्त्रो देवीः पतिमिन्द्रमवर्धयन्।
अस्पृक्षद्भारती दिव ँ रुद्रैर्यज्ञ ँ सरस्वतीडा।
वसुमती गृहान्वसु वने वसुधेयस्य व्यन्तु यज।।

।। कलम पूजा।।

अक्षत–फूल लेकर कलम की प्रार्थना करें–

ॐ लेखिनी निर्मिता पूर्वम् ब्रह्मणा परमेष्ठिना।
लोकानां च हितार्थाय तस्मात्वां पूजयाम्यहम्।।
ॐ ध्यायेऽहं लेखिनीं देवीं सर्वेषां जयदायिनीम्।
प्राप्यते कृपया यस्या लाभालाभौ जयाजयौ।।

।। दवात पूजा।।

अक्षत–फूल लेकर ध्यान करें–

ॐ मषि त्वं लेखिनीयुक्ता चित्रगुप्ता शयस्थिता।
सदक्षराणां पत्रेऽस्मिन् लेख्यं कुरु ते सर्वदा।।

कलम–दवात–बही की गंध–अक्षत–फूल चढ़ाकर पूजा करें। फूल लेकर सरस्वतीजी की प्रार्थना करें–

ॐ सरस्वति शुक्लवर्णे वीणापुस्तक धारिणि।
त्रलोक्य वन्दिते देवि प्रसन्ना भव सर्वदा।।

बही की प्रार्थना करें–

ॐ शारदे लोकमातस्त्वम् आश्रिताभीष्ट दायिनी।
पुष्पाञ्जलिम् गृहाण त्वं मया भक्तया समर्पितम्।।

कलम की प्रार्थना करें–

ॐ लेखिनी त्वं महादेवि सर्वविद्या प्रकाशिनि।
मद्गृहे धन धान्यादि समृद्धिं कुरु सर्वदा।।

दवात की प्रार्थना करें–

ॐ या कालिका रोगहरा सुवंद्या वैश्यैः समस्तै व्यवहार दक्षैः।
जनैर्जनानां भयहारिणी च सा देवमाता मयि सौख्यदात्री।।

।। तुला (तराजू) पूजा।।

तुला में रक्षासूत्र (कलाई) बांध कर स्वास्तिक बनाकर पूजा करें।
अक्षत–फूल लेकर ध्यान करें–

ॐ त्वं तुले सर्वदेवानाम् प्रमाणमिह कीर्तित।
अतस्त्वां पूजयिष्यामि धर्मार्थ सुख हेतवे।।
तुलाधिष्ठातृदेवताभ्यो नमः।

तराजू का पंचोपचार पूजन करें–प्रार्थना करें–

ॐ पदार्थमान सिद्ध्यर्थम् ब्रह्मणा कल्पिता पुरा।
तुला नामेति कथितं संख्यारूप मुपास्महे।।

।। गज वाहन की पूजा।।

अक्षत–फूल लेकर ध्यान करें–

ॐ अतस्त्वां पूजयिष्यामि गजराज नमोऽस्तुते।
ददातु वसने वृद्धिम् धनैर्युक्तं करोतु माम।।

पंचोपचार विधि से पूजन करें–फूल लेकर प्रार्थना करें–

ॐ गजराज नमस्तेऽस्तु नरकार्णवतारक।
सुखदः पुत्र पौत्रादेः सर्वदा बृद्धिहेतवे।।
अनना पूजया प्रीयताम् न मम।

।। दुकान की पूजा।।

अक्षत–फूल छोड़कर प्रार्थना करें –

ॐ विपणि त्वं महादेवि धनधान्य प्रवर्धिनि।
मद्गृहे सुयशो देहि धन धान्यादिकं तथा।।
विपण्यधिष्ठातृ देवतायै नमो नमः।

।। तिजोरी की पूजा।।

तिजोरी में स्वास्तिक बनाकर अक्षत–फूल छोड़ दें। प्रार्थना करें –

ॐ महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं प्रसन्ना भव मंगले।
स्वर्ण वित्तादि रूपेण मद्गृहे त्वं चिरं वस।।

।। भंडार गृह की पूजा।।

ॐ सुवर्णकुप्यं द्रव्याणां स्थानं कोशगृहं हि नः।
प्रसादाद् धनदस्यैव नित्यं भवतु वृद्धिमत।।

।। धान्य की पूजा।।

ॐ ब्रीह्यादीनि च धान्यानि प्राणिनां प्रीणनाय वै।
ऋषयः पितरो देवा ऋद्धिं कुर्वन्तु तेषु नः।।

गुड़-धनिया मिलाकर लक्ष्मी-गणेश-कुबेर-कलम-दवात-बही पर चढ़ादें।

एक घी के दीपक को रात्रि भर जलने के लिए पंचोपचार पूजा करें। हाथ में कुश-अक्षत-जल लेकर संकल्प करें-

ॐ अद्य शुभ पुण्यतिथौ...गोत्रः...नामाऽहंमम गृहे
लक्षअमी वृद्धि हेतवे अलक्ष्मी निस्सारणार्थम्
अखंडदीप स्थापनं पूजनं च करिश्यते।

संकल्प के बाद दीपक का पूजन मंत्र- **ॐ दीपेभ्यो नमः।।**

पुष्प–अक्षत लेकर अखण्ड दीप की प्रार्थना करें –

ॐ भो दीप देरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
इमां मया कृकतां पूजां गृह्लंश्तेजः प्रवर्धय।।
शुभं करोतु कल्याणमारोग्य धन सम्पदाम्।
शत्रु बुद्धि विनाशाय दीपज्योति नमोऽस्तुते।।
अखण्ड दीपकं देव्याः प्रीतये मंगलप्रदम्।
उज्जवलये अहोरात्र मेकचित्तो धृतव्रतः।।
अनया पूजया अखण्ड दीपं प्रीयतां न मम।।

।। स्वास्तिक तथा पंचदशी यंत्र पूजन।।

इसके बाद दीवाल में बनी स्वास्तिक तथा पंचशी यंत्र (15 अंकों के यंत्र) का पूजन कर दें। हाथ जोड़कर प्रार्थना करें। स्वास्तिक यंत्र प्रार्थना–

ॐ स्वस्तिनाम परं दैवं स्वस्तिकारण कारणम्।
स्वस्तिं कुरु महालक्ष्मि धनवान् भूमिपो भवेम।।

पुष्प लेकर महाँलक्ष्मीजी की प्रार्थना करें–

ॐ नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शंखं चक्रं गदां हस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते।।

कपूर की आरती करें–

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योअजायत।
श्रोत्राद् वायश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।
कर्पूर गौरं करुणावतारं संसार सारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।

आरती की थाली रखकर जल छोड़ दें। आरती ले लें। अब पुष्पांजलि–हाथमें फूल लेकर प्रार्थना करें–

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यज्ञ पूर्वे साध्याः सन्ति देवा।।
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने, नमो वयं वै श्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् काम कामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो दधातु।।
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।

ॐ... स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्या धिपत्य मयं समन्त पर्यायै स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषां परार्धात पृथिव्यै समुद्र पर्यान्ता या एक राडिति। तदप्ये श्लोकोऽभिगीतो मरूतः परिवेष्टारों मरुत्तस्या वसन्गृहे। आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासदः।।

पुरोहित यजमान के मस्तक में तिलक–अक्षत लगाएं–कलाई कलावा बांधें।

तिलक मंत्र–

ॐ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणः।
तिलकं तु प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थ सिद्धये।।

कलाई बांधने का मंत्र–

ॐ येन वद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।

।। आचार्य दक्षिणा संकल्प।।

यजमान ब्राह्मण को सिंचन कर तिलक लगा दें–

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षाम्नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वयेश्रियम्।।

यजमान कुश–अक्षत–जल, वरण, वस्त्र, दक्षिणा लेकर संकल्प करे–

ॐ अद्य पूर्वोच्चारित विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ...
गोत्रः नामाऽहम् अस्मिन् पुण्यपर्वणि-आवाहित देवतादीनां
पूजनप्रतिष्ठार्थम्-शुभफल प्राप्त्यर्थञ्च इदं दक्षिणाद्रव्यं
गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं संप्रददे।

ब्राह्मण दक्षिणा लेकर कहें– ।। **ॐ स्वस्ति।।**

भूयसी दक्षिणा संकल्प–फिर कुश अक्षत–जल–द्रव्य लेकर संकल्प पढ़ें–

ॐ अद्य शुभ पुण्यपर्वणि...गोत्रः...नामाऽहम्
अस्मिन् कर्मणि परिपूर्णतावाप्तये न्यूनातिरिक्त
दोष परिहारार्थम् इमां भूयसीदक्षिणां गोत्रेभ्यो
ब्राह्मणेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च विभज्य दातुमुत्सृजे।

फूल लेकर प्रार्थना करें–

ॐ प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।

स्मरणादेव तद्विष्णोः परिपूर्णमस्यादिति श्रुतिः।।

यस्यस्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।

ब्राह्मण यजमान को गुड़-धनिया-फल, मिष्ठान, प्रसाद एवं मंत्राक्षत दे-

ॐ मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धि नाशोऽस्तु मित्राणा मुदयस्तव।।

यजमान कुलदेवों का ध्यान कर मंत्राक्षत लक्ष्मीजी के समक्ष छोड़ दे।

यजमान रोकड़-बही पर 'पंच देवताओं' का नाम तथा मिति-तिथि लिख कर सूखी रोलौ चढ़ा दे। पश्चात अपने बुजुर्ग-पूज्यों के चरण छुएं, आशीर्वाद लेवे।

।। इति दीपावली पूजनम्।।

महाँलक्ष्मीजी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशिदिन सेवत, हर विष्णु विधाता।। ॐ जय लक्ष्मी...
उमा रमा ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता।। ॐ जय लक्ष्मी...
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-संपत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्याता, ऋद्धि-सिद्धि पाता।। ॐ जय लक्ष्मी...
तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभ दाता।
कर्म-प्रभाव प्रकाशिनि, भव निधि की त्राता।। ॐ जय लक्ष्मी...
जिस घर में तुम रहतीं, सब सद्‌गुण आता।
सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता।। ॐ जय लक्ष्मी...
तुम बिन यज्ञ न होवे, वस्त्र न कोई पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता।। ॐ जय लक्ष्मी...
शुभगुण मंदिर सुंदर, क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता।। ॐ जय लक्ष्मी...
महालक्ष्मीजी की आरती, जो कोई जन गाता।
उर आनंद समाता, पाप उतर जाता।।। ॐ जय लक्ष्मी...

महाँलक्ष्मीजी की स्तुति

महादेवी महालक्ष्मी नमस्ते त्वं विष्णु प्रिये।
शक्तिदायी महालक्ष्मी नमस्ते दुःख भंजनि।।1।।
श्रेया प्राप्ति निमित्ताय महालक्ष्मी नमाम्यहम।
पतितो द्धारीणि देवी नमाम्यहं पुनः पुनः ।।2।।
वेदांस्त्वा संस्तुवन्ति ही शास्त्राणि चं मुर्हुमुः।
देवांस्त्वां प्रणमन्तिही लक्ष्मीदेवी नमोऽस्तुते।।3।।
नमस्ते महालक्ष्मी नमस्ते भवभंजनी।
भुक्तिमुक्ति न लभ्यते महादेवी त्वयि कृपा बिना।।4।
सुख सौभाग्यं न प्राप्नोति पत्र लक्ष्मी न विधते।
न तत्फलं समाप्नोति महालक्ष्मी नमाभ्यहम।।5।।
देहि सौभाग्यमारोग्यं देहिमे परमं सुखम्।
नमस्ते आद्यशक्ति त्वं नमस्ते भीड़भंजनी।।6।।
विधेहि देवी कल्यणं विधेहि परमां श्रियमं।
विधावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु।।7।।
अचिन्त्य रूप-चरिते सर्वशत्रु विनाशिनी।
नमस्ते महामाया सर्व सुख प्रदायिनी।।8।।
नमाम्यहं महालक्ष्मी नमाम्यहम सुरेश्वरी।
नमाम्यहं जगद्धात्री नमाम्यहं परमेश्वरी।।9।।